Socio-cultural contributions of Sarojini Naidu

Sarojini Chattopadhyaya was the daughter of Aghoranath Chattopadhyaya, a scientist and the founder of the Nizam College in Hyderabad, and Barada Sundari Devi, a famous Bengali poetess. A renowned orator and accomplished poet, she is known as 'The Nightingale of India'.

Literary and Cultural contributions

As a prodigious child, Naidu wrote the play "Maher Muneer", which earned her a scholarship to study abroad. The sobriquet 'Nightingale of India' or Bharatiya Kokila was bestowed on her because of her lyrical poems, which are rich in imagery and have a simple but timeless beauty appreciated by poetry lovers and studied by school students across the country. A child prodigy, freedom fighter and woman leader, Sarojini Naidu was also a skilled orator and exemplary administrator. A gifted student, Sarojini was proficient in Bengali, Urdu, Telugu, English and Persian. At the tender age of twelve, she topped the matriculation examination at Madras University. Her father wanted her to become a mathematician or scientist but she had an innate interest in poetry.

In 1905, her first collection of poems was published under the title "The Golden Threshold". Later, her poem collections "The Bird Of Time" and "The Broken Wings" were published. Both of these attracted a wide readership in India and England. She also wrote essays and articles about her political views and women's rights issues in India. In 1961, her daughter Padmaja helped in editing

and publishing of her poem collection “The Feather Of The Dawn” posthumously.

Role in Women’s Rights Movement in India

Sarojini Naidu played an important role in women’s rights struggle in India. She helped in shaping Women’s Indian Association in 1917 with Annie Besant and others. The Association sought equal rights including the right to vote and represent. She presented the need to include more women in the Congress and in the freedom struggle. During 1918, British and Indian feminists including Naidu set up a magazine called “Stri Dharma” to present international news from a feminist perspective. Along with Annie Besant, who was the President’s Rule League at that time, she went to London to present the case for women’s right to vote to the Joint Select Committee. In 1931, the Congress promised to established women’s right to vote when it came in power. It was enacted along with India’s independence in 1947 and universal suffrage is a major facet in the Indian constitution.

Role in Freedom Movement in India

Very few women in India were at the forefront of the Independence struggle due to illiteracy and other social evils. As a woman and a leader, Sarojini Naidu proved that talent, dedication and the drive to achieve something as not restricted to gender. She joined the Indian National Congress when the British partitioned

Bengal in 1905; her father was also active in protesting the partition. She met Jawaharlal Nehru in 1916, working with him for the rights of indigo workers. That same year she met Mahatma Gandhi. In 1919, in response to the Rowlatt Act passed by the British, Gandhi formed the Non-Cooperation Movement and Naidu joined. In 1919 she was appointed the ambassador to England of the Home Rule League, advocating for the Government of India Act which granted limited legislative powers to India, although it did not grant women the vote. She returned to India the next year. She traveled to Africa, Europe, and North America, representing the Congress movement. In 1928, she promoted the Indian movement of non-violence in the United States.

1925, she was elected as the first Indian woman President of the Indian National Congress Party. In 1930, when Mahatma Gandhi launched the Salt Satyagraha, she was one of the key participants of the movement and even joined him for the first round table conference. She was later jailed during the quit India movement, but continued to work for Independence struggle. Post-Independence, she became the first governor of the United Provinces of Agra and Oudh from 1947 to 1949. Sarojini Naidu was the first woman Governor of Uttar Pradesh.

She was awarded the Kaiser-i-Hind medal by the British government for her vehement work during the plague epidemic in India. A contemporary poet, Bappaditya Bandopadhyay quoted “Sarojini Naidu inspired the Indian Renaissance Movement and had a mission to improve the life of Indian woman.”

सरोजिनी नायडू का सामाजिक-सांस्कृतिक योगदान

सरोजिनी चट्टोपाध्याय एक वैज्ञानिक अघोरनाथ चट्टोपाध्याय की बेटी थीं, जो हैदराबाद में निज़ाम कॉलेज के संस्थापक और प्रसिद्ध बंगाली कवियित्री बरदा सुंदरी देवी की बेटी थीं। एक प्रसिद्ध वक्ता और निपुण कवि, उन्हें 'द नाइटिंगेल ऑफ इंडिया' के रूप में जाना जाता है।

साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान

एक विलक्षण बच्चे के रूप में, नायडू ने "माहेर मुनीर" नाटक लिखा, जिससे उन्हें विदेश में अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्ति मिली। भारत की कोकिला ing कोकिलाले 'या भारतीय कोकिला को उनकी गीतात्मक कविताओं की वजह से उन्हें सम्मानित किया गया, जो कल्पना में समृद्ध हैं और कविता प्रेमियों द्वारा सराहना की गई एक सरल लेकिन कालातीत सुंदरता है और देश भर के स्कूली छात्रों द्वारा पढ़ाई जाती है। एक बच्चा विलक्षण, स्वतंत्रता सेनानी और महिला नेता, सरोजिनी नायडू एक कुशल संत्री और अनुकरणीय प्रशासक भी थीं। एक प्रतिभाशाली छात्र, सरोजिनी बंगाली, उर्दू, तेलुगु, अंग्रेजी और फारसी में पारंगत थी। बारह वर्ष की उम्र में, उसने मद्रास विश्वविद्यालय में

मैट्रिक परीक्षा में टॉप किया। उसके पिता चाहते थे कि वह गणितज्ञ या वैज्ञानिक बने लेकिन कविता में उसकी सहज रुचि थी।

1905 में, उनका पहला कविता संग्रह "द गोल्डन थ्रेशोल्ड" शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। बाद में, उनके कविता संग्रह "द बर्ड ऑफ टाइम" और "द ब्रोकन विंग्स" प्रकाशित हुए। इन दोनों ने भारत और इंग्लैंड में एक व्यापक पाठक को आकर्षित किया। उन्होंने भारत में अपने राजनीतिक विचारों और महिलाओं के अधिकारों के मुद्दों के बारे में निबंध और लेख भी लिखे। 1961 में, उनकी बेटी पद्मजा ने मरणोपरांत अपने कविता संग्रह "द फेदर ऑफ द डॉन" के संपादन और प्रकाशन में मदद की।

भारत में महिला अधिकार आंदोलन में भूमिका

सरोजिनी नायडू ने भारत में महिलाओं के अधिकारों के संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने 1917 में एनी बेसेंट और अन्य लोगों के साथ महिला इंडियन एसोसिएशन को आकार देने में मदद की। एसोसिएशन ने वोट देने और प्रतिनिधित्व करने का अधिकार सहित समान अधिकार की मांग की। उन्होंने कांग्रेस में और महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल करने की आवश्यकता को प्रस्तुत किया। 1918 के दौरान, नायडू सहित ब्रिटिश और भारतीय नारीवादियों ने एक महिलावादी दृष्टिकोण से अंतर्राष्ट्रीय समाचार

प्रस्तुत करने के लिए "स्ट्राइक धर्म" नामक एक पत्रिका की स्थापना की। एनी बेसेंट, जो उस समय राष्ट्रपति शासन थी, के साथ, वह संयुक्त चयन समिति को महिलाओं के वोट के अधिकार के लिए मामला पेश करने के लिए लंदन गई थी। 1931 में, कांग्रेस ने सत्ता में आने पर महिलाओं को वोट देने का अधिकार स्थापित करने का वादा किया। इसे 1947 में भारत की स्वतंत्रता के साथ लागू किया गया था और भारतीय संविधान में सार्वभौमिक मताधिकार एक प्रमुख पहलू है।

स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका

भारत में बहुत कम महिलाएँ अशिक्षा और अन्य सामाजिक बुराइयों के कारण स्वतंत्रता संग्राम में थीं। एक महिला और एक नेता के रूप में, सरोजिनी नायडू ने साबित कर दिया कि प्रतिभा, समर्पण और कुछ हासिल करने के लिए ड्राइव जो कि लिंग तक सीमित नहीं है। 1905 में जब ब्रिटिश बंगाल का विभाजन हुआ तो वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गईं; उसके पिता भी विभाजन के विरोध में सक्रिय थे। उन्होंने 1916 में जवाहरलाल नेहरू से मुलाकात की, उनके साथ इंडिगो श्रमिकों के अधिकारों के लिए काम किया। उसी वर्ष वह महात्मा गांधी से मिलीं। 1919 में, अंग्रेजों द्वारा पारित रोलेट एक्ट के जवाब में, गांधी

ने असहयोग आंदोलन का गठन किया और नायडू शामिल हुए। 1919 में उन्हें इंग्लैंड की होम रूल लीग की राजदूत नियुक्त किया गया, जो भारत सरकार अधिनियम की वकालत कर रही थी, जिसने भारत को सीमित विधायी शक्तियाँ प्रदान कीं, हालाँकि इसने महिलाओं को वोट नहीं दिया। वह अगले साल भारत लौट आई। उन्होंने कांग्रेस आंदोलन का प्रतिनिधित्व करते हुए अफ्रीका, यूरोप और उत्तरी अमेरिका की यात्रा की। 1928 में, उन्होंने संयुक्त राज्य में अहिंसा के भारतीय आंदोलन को बढ़ावा दिया।1925, उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की पहली भारतीय महिला अध्यक्ष के रूप में चुना गया। 1930 में, जब महात्मा गांधी ने नमक सत्याग्रह शुरू किया, तो वह आंदोलन के प्रमुख प्रतिभागियों में से एक थे और यहां तक कि पहले गोलमेज सम्मेलन में भी शामिल हुए। बाद में उन्हें भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जेल में डाल दिया गया, लेकिन उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के लिए काम करना जारी रखा। स्वतंत्रता के बाद, वह 1947 से 1949 तक आगरा और अवध के संयुक्त प्रांत की पहली गवर्नर बनीं। सरोजिनी नायडू उत्तर प्रदेश की पहली महिला राज्यपाल थीं।

भारत में प्लेग की महामारी के दौरान ब्रिटिश सरकार द्वारा उन्हें उनके काम के लिए कैसर-ए-हिंद पदक से सम्मानित किया गया था। एक समकालीन कवि, बप्पादित्य बंदोपाध्याय ने कहा “सरोजिनी नायडू ने भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन को प्रेरित किया और भारतीय महिला के जीवन को बेहतर बनाने के लिए एक मिशन था।”